International Journal of Engineering Research & Management Technology
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) ISSN: 2348-4039
Volume 11, Issue-3 May-June- 2024 Impact Factor: 7.09
Email: editor@ijermt.org www.ijermt.org

मुगलकालीन संस्कृति एवं हिन्दु–मुस्लिम सम्बन्ध

Khushboo Chaudhary,

M.A. History, (UGC-NET).

Mail.ID: chaudharykhushboo0015@gmail.com

1.1 प्रस्तावना

मुगल शासनकाल में विभिन्न क्षत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई आर सांस्कृतिक जीवन भी इससे अप्रभावित नहीं रहा। तुर्क–अफगान शासकों में योद्धा प्रवृत्ति, साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा और सनिक गौरव की भावना सांस्कृतिक कार्यों में अभिरूचि से अधिक प्रबल थी। सांस्कृतिक क्षेत्र में उन्होंने साहित्य और स्थापत्य कला के प्रति ही विशेष योगदान दिया। मुगल शासकों ने जहाँ साम्राज्य निर्माण और सैनिक गौरव में अभिरूचि ली वहीं सांस्कृतिक जीवन को भी सम्पन्न बनान में व्यापक योगदान दिया। मुगल साम्राज्य का संस्थापक, बाबर एक उत्कृष्ट लेखक और कवि होने के साथ–साथ सुसंस्कृत व्यक्ति भी था। उसने बागों अथवा उद्यानों क निर्माण का भारत में लोकप्रिय बनाया, नये फूल और फल यहाँ प्रचलित किए। हुमायूँ ने भी कुछ भवनों का निर्माण कराया परन्तु अकबर के शासनकाल से व्यापक सांस्कृतिक प्रगति आरम्भ हुई। अकबर ने राजपूतों के साथ न केवल मैत्री की बल्कि उनके रहन–सहन के ढंग और उनकी परम्पराओं को भी मुगल दरबार में प्रचलित किया। स्थापत्यकला में उसने भारतीय, क्षैतिज शैली को आधार बनाया और सौन्दर्य एवं अलंकार के लिए इस्लामी, मेहराबी शैली की विशेषताओं को ग्रहण किया। उसने बड़ी संख्या में राजपूत चित्रकारों को बहाल किया और ईरानी चित्रकला की विशेषताओं को भारतीय (राजपूत) प्रभाव के सम्मिश्रण से नया रूप प्राप्त हुआ। अकबर ने दरबारी संगीत की परम्परा लागू की और ईरानी एवं भारतीय संगीत की परम्पराओं को एक–दूसरे में विलीन होने का अवसर प्रदान किया। उसने फारसी साहित्य को भारत में चरमोत्कर्ष तक पहुँचाया। उसके उत्तराधिकारियों में जहाँगीर ने चित्रकला को और शाहजहाँ ने स्थापत्य कला को चरमोत्कर्ष तक पहुँचाया, जबकि औरंगजेब ने साहित्यिक कृतियों को प्रोत्साहन देना जारी रखा। औरंगजेब की मृत्यु के बाद भी मुगल दरबार में संगीत और नृत्य तथा साहित्य का प्रश्रय मिलता रहा। इस प्रकार साम्राज्य के पतन के काल में भी सांस्कृतिक गतिविधियों का क्रम पूर्णतः स्थगित नहीं हुआ।

1.2 हिन्दु–मुस्लिम सम्बन्ध

मुगल शासकों का धार्मिक दृष्टिकोण उदार था। उन्होंने रूढ़िवादी और कट्टरपंथी धार्मिक तत्वों को नियंत्रित रखा और राजनैतिक निर्णयों में इन्हें महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर नहीं दिया। उन्होंने भारत में हिन्दू प्रजा के प्रति भी उदारता की नीति अपनाई। इस सन्दर्भ में अकबर का शासनकाल विशेष महत्व रखता है। 15वीं और 16वीं शताब्दियों में सामान्यतः मुस्लिम और हिन्दू समाज में सहिष्णुता और सह–अस्तित्व के विचारों की प्रगति हो रही थी। एक ओर इस काल में कबीर, नानक, दादू जैसे भक्त संत और दूसरी ओर चिश्ती सम्प्रदाय के सूफी संत धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास से समाज को मुक्त कराने और समानता, बन्धुत्व और प्रेमपूर्ण सह–अस्तित्व का उपदेश दे रहे थे तो दूसरी ओर

नवोदित क्षेत्रीय राज्यों का मुस्लिम शासक वर्ग हिन्दू प्रजा के प्रति उदारतापूर्ण व्यवहार कर रहा था। जौनपुर के सुल्तान इब्राहीम शाह शर्की, बंगाल के इल्यास शाह और आजम शाह, काश्मीर का जैनुल आबेदीन, दिल्ली का अफगान सम्राट शेरशाह, आदि हिन्दू प्रजा के प्रति अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध है। इन्होंन प्रशासन में हिन्दुओं को बड़े पद प्रदान किए, हिन्दुओं की नियुक्ति सामंत वर्ग में की, जैनुल आबेदीन ने जिज़या कर और गौ–हत्या का अपने राज्य में अन्त किया, शेरशाह ने ब्राह्मणों को आर्थिक अनुदान दिए, कल्याणकारी कार्यों में हिन्दूओं को राज्य की ओर से हर सम्भव सुविधा प्रदान की। इन्हीं परिस्थितियों ने अकबर क अधीन राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक समन्वय की पृष्ठभूमि तैयार की।

अकबर ने सर्वव्यापी सहिष्णुता के आधार पर धार्मिक नीति का अनुसरण किया। उसने न केवल हिन्दू धर्म और इस्लाम बल्कि ईसाई धर्म, सिक्ख धर्म, बौद्ध और जैन धर्म, पारसी धर्म आदि के प्रति उदारता का प्रदर्शन किया। उसने इन तमाम धर्मों के आचार्यों से धार्मिक प्रश्नों पर तर्क–वितर्क किए और एक समन्वित आचार–संहिता दीने–इलाही के नाम से प्रस्तुत की। इसे मानने को सभी धर्मावलम्बी मुक्त थे और चूँकि यह कोई नया धर्म नहीं था इसलिए इसे स्वीकार करने के लिए अपने मूल धर्म को त्यागना भी अनिवार्य नहीं था। इस प्रकार अकबर ने विभिन्न धर्मों और विशेषकर हिन्दू धर्म और इस्लाम के मानने वालों के बीच सहिष्णुता की भावना को बढ़ाया। यह भावना अकबर के उत्तराधिकारियों के अधीन भी बनी रही। जहांगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में मुगल शासकों और हिन्दू मंसबदारों, अधिकारियों एवं आम प्रजा के बीच सौहार्दतापूर्ण सम्बन्ध बने रहे। औरंगजेब के समय में इन सम्बन्धों का रूप बदला और औरंगजेब की धार्मिक नीति भी कट्टरता की ओर अग्रसर हुई परन्तु यह परिवर्तन सामान्य प्रजा के स्तर पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को प्रभावित नहीं कर सका।

1.3 एकीकरण की प्रवृत्ति

मुगलकाल में भारतीय उपमहाद्वीप के एकीकरण की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई। अकबर का शासनकाल (1556–1605) इस सन्दर्भ में एक अत्यन्त रचनात्मक काल रहा। अकबर ने न केवल राजनैतिक प्रशासनिक और भौगोलिक एकीकरण की स्थापना की बल्कि उसने सांस्कृतिक क्षेत्र में भी एकीकरण लाया क्योंकि राजनैतिक एकीकरण को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए यह अनिवार्य था। अकबर ने किसी एक सांस्कृतिक परम्परा को अन्य पर आरोपित करने का कोई प्रयास नहीं किया बल्कि इस उपमहाद्वीप की भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं को साथ–साथ उन्नत और विकसित होने का अवसर प्रदान किया। इस प्रकार अकबर ने विविधता में एकता के उस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहा जो भारत की एकता का मूल आधार है।

अकबर ने भारत में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों के बीच एकीकरण और समन्वय स्थापित करने की कोशिश की। एक ओर भारत की अपनी सांस्कृतिक परम्परा थी और उसकी विशिष्टताएँ, तो दूसरी ओर एक नयी सांस्कृतिक परम्परा थी जिसमें इस्लामी एवं ईरानी विशिष्टतायें मिली हुई थी। इन दोनों का समावेश भारत में अकबर के शासनकाल में सम्पन्न हुआ। इसका प्रभाव सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ा। यह प्रभाव विशेष रूप से स्थापत्य कला, संगीत एवं चित्रकला पर पड़ा। साहित्य के क्षेत्र में अकबर ने भारतीय रचनाओं का फारसी भाषा में अनुवार करवाया जिससे भारत की समृद्ध साहित्यिक परम्परा से विदेशी मुसलमान परिचित हो सके।

अकबर के शासनकाल में भवनों का निर्माण व्यापक रूप से हुआ और नये नगरों की स्थापना भी हुई। राजधानी आगरा और फतेहपुर सिकरी के अतिरिक्त लाहौर में, नव–स्थापित नगर इलाहाबाद तथा अम्बेर नगर में भी बड़े पैमाने पर भवनों का निर्माण हुआ। इस काल की अन्तिम उल्लेखनीय उपलब्धि आगरा के समीप सिकन्दरा में स्थित अकबर का मकबरा है जिसका मूल आधार ईरानी शैली से प्रभावित है किन्तु जिसका निर्मित रूप और अलंकरण भारतीय शैली का अनूठा उदाहरण है।

संगीत के क्षेत्र में भी अकबर के दरबार में ईरानी एवं भारतीय परम्परा का समावेश हुआ। यूँ तो सल्तनत काल से ही भारतीय एवं ईरानी संगीत का आपसी सम्पर्क और एक–दूसरे पर प्रभाव देखने को मिलता है लेकिन इसका प्रभाव सूफी सन्तों और जनसाधरण तक ही सीमित था। शासक वर्ग के स्तर पर दिल्ली क सुल्तानों ने संगीत को विशेष प्रश्रय एवं प्रोत्साहन नहीं दिया। अकबर पहला शासक था जिसने संगीत को दरबारी शिष्टाचार का अभिन्न अंग बनाया और दरबारी संगीतज्ञों की नियुक्ति की। उसके दरबार में अनेक विख्यात संगीतज्ञ थे जिनकी पूर्ण सूची आईने अकबरी में उपलब्ध है और जिनमें सबसे प्रसिद्ध नाम तानसेन का है। यह माना जाता है कि अमीर खुसरो द्वारा ईरानी और भारतीय संगीत के समन्वय का जो प्रयास आरम्भ हुआ था वह तानसेन के साथ परिपूर्ण हो गया और नयी राग रागिनियाँ प्रचलित हुई जो न तो पूर्णतः ईरानी थीं और न पूर्णतः भारतीय।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य के दृष्टिकोण से भी अकबर का शासनकाल उल्लेखनीय है। इसी काल में तुलसीदास की जगत प्रसिद्ध रचना "रामचरित मनस" को लिखा गया। यद्यपि तुलसीदास का अकबर के दरबार से कोई सम्बन्ध नहीं था फिर भी अकबर के शासनकाल की उदार परम्पराओं ने हिन्दी भाषा के विकास का उपयुक्त वातावरण बनाया। अकबर के दरबार में भी हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध कवियों को पाते हैं। इनमें एक महत्वपूर्ण नाम अब्दुल रहीम खानखाना का है जिनके दोहे आज भी हिन्दी भाषा में विशिष्ट स्थान रखते हैं। हिन्दुओं द्वारा फारसी भाषा के अध्ययन की प्रवृत्ति इस काल में बढ़ी। कुछ तो प्रशासनिक पदों की प्राप्ति के लिए और कुछ जिज्ञासा और अभिरूचि के कारण हिन्दुओं ने फारसी भाषा को अपनाया। कालान्तर में हिन्दुओं ने फारसी भाषा में उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना भी की।

अकबर की सबसे बड़ी उपलब्धि सांस्कृतिक एकीकरण के क्षेत्र में है। यह स्मरणीय है कि एक ऐसे युग में जब सारा यूरोप कैथोलिक और प्रोस्टेन्ट सम्प्रदायों के बीच धार्मिक विवाद से पीड़ित था अकबर ने भारत में सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता, सद्भाव और सम्मान की नीति अपनाई जिसे सुलहेकुल कहा जाता है। उसने एक नीति अपनायी जिसमें कट्टरपन्थियों के प्रभाव को समाप्त कर उदारता और सहिष्णुता को आधार बनाया गया। अकबर ने इस नीति का आरम्भ 1564 ई0 में जज़िया, तीर्थयात्रा कर और बलपूर्वक धर्म परिवर्तन को समाप्त करके किया। उसने राजपूतों को अपना मित्र बनाया और उन्हें कुछ सुविधाएँ देकर उनका सहयोग प्राप्त किया। कुछ राजपूत शासकों के साथ उसने युद्ध भी किये लेकिन इनके पीछे धार्मिक कटुता की भावना नहीं थी। उसने पराजित राजपूत शासकों पर कोई अत्याचार भी नहीं किया न ही उन्हें अपमानित करने की कोशिश की। उसने कुछ राजपूत घरानों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किए और राजपूत पत्नियों को धार्मिक स्वतंत्रता और पूरा सम्मान दिया। उसके द्वारा स्थापित एकता, शान्ति और सुव्यवस्था ने आर्थिक विकास और सांस्कृतिक प्रगति

को सम्भव बनाया और इससे एक संयुक्त संस्कृति के विकास का मार्ग भी प्रशस्त हुअ जो मुगल शासकों की सबसे उल्लेखनीय देन है।

1.4 मुगल स्थापत्य कला

भारत में तुर्कों का आगमन 11वीं शताब्दी से ही आरम्भ हो गया था और 13वीं शताब्दी में उन्होंने भारत में अपना शासन भी स्थापित कर लिया था। दिल्ली सल्तनत के इन शासकों ने अनेक भव्य इमारतों और भवनों का निर्माण कराया जिसमें भारतीय कला एवं इस्लामी स्थापत्य कला की विशेषताओं का समावेश था। इस प्रकार एक नई समन्वित शैली का विकास दिल्ली सल्तनत के काल में हुआ जो 14वीं शताब्दी के अन्त तक दिल्ली के शासकों के तत्वाधान में विकसित होती रही। तैमूर के आक्रमण और तुगलक साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत में अनेक क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ जिनके अधीनस्थ क्षेत्रीय शैलियाँ विकसित हुईं। मुगल सम्राटों ने इन विभिन्न क्षेत्रीय शैलियों का एकीकरण किया और इसमें ईरानी शैली की नई विशेषताओं का समावेश किया। परिणामस्वरूप एक नई एवं अधिक सुसम्पन्न और सुसंस्कृत शैली का विकास सम्भव हो सका।

भारत में मुगल स्थापत्य का विकास वास्तव में अकबर के साथ ही आरम्भ हो सका। यद्यपि बाबर और हुमायूँ द्वारा कुछ भवनों का निर्माण हुआ, परन्तु उनकी शैली में कोई विशिष्टता प्रतीत नहीं हुई। उसके बाद शेरशाह द्वारा निर्मित मकबरे में सल्तनतकालीन शैली से कुछ परिवर्तन आये, अपितु अकबर के काल में ही एक नयी शैली का पूर्ण विकास हो सका। इसकी क्रमिक उन्नति जहाँगीर, एवं शाहजहाँ के काल में हुई और शाहजहाँ क अधीन तो मुगल स्थापत्य अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची। यह स्वर्ण–युग भी कहा जाता है किन्तु इसके बाद पतन की प्रक्रिया भी आरम्भ हुई तथा औरंगजेब के मरणोपरान्त मुगल साम्राज्य के साथ मुगल स्थापत्य कला का भी पतन हो गया।

1.5 मुगल उद्यान

मुगल शासकों ने भारत में उद्यानों का विकास बड़े पैमाने पर किया। बाबर ने आगरा में 'आराम बाग' का निर्माण कराया। जहाँगीर द्वारा कश्मीर की घाटी में अनेक उद्यान लगवाये गये जिनमें 'शालीमार बाग' सबसे प्रसिद्ध है। शाहजहाँ ने कश्मीर में 'निशात बाग' और 'चश्मा–ए–शाही' के उद्यान लगवाये जबकि औरंगजेब ने पिन्जौर (हरियाणा) के समीप उद्यान लगवाए। इसके अतिरिक्त सभी प्रमुख मकबरों में उद्यानों का प्रयोग किया गया जिनके उदाहरण हुमायूँ के मकबरे से लेकर सफरदरजंग के मकबरे तक देखे जा सकते हैं। महलों और अन्य इमारतों में भी बाग अनिवार्य रूप से सम्मिलित थे। यह बाग अथवा उद्यान एक निश्चित योजना के अनुसार बनवाये जाते थे। यह चार भागों में विभक्त होते थे मध्य में एक बारादरी या मण्डप का निर्माण होता था। इससे चारों दिशाओं में 'रविश' या रास्ते निकलते थे जो उद्यान को चार भागों में विभक्त कर देते थे। इसलिए इन्हें "चार बाग" कहते हैं। इनमें फव्वारों का प्रयोग भी होता था जो आमतौर पर 'रविश' के साथ स्थित होते थे। भारतीय स्थापत्य को मुगलों की यह दोनों देनें महत्वपूर्ण थीं, उद्यानों का निर्माण और बहते पानी तथा फव्वारों का उपयोग। इक्तिार हुसैन सिद्दीकी का मत है कि मुगलों के आगमन से पहले ही अफगान शासकों ने उद्यान विकसित किए थे। उन्होंने गुजरात के सुल्तानों का इस दिशा में योगदान अंकित किया है। दिल्ली में

लोदी शासकों के उद्यान एक अन्य उदाहरण हैं। परन्तु यह स्मरणीय है कि मनोरंजन स्थल के रूप में उद्यान मुगल शासकों ने ही सर्वप्रथम विकसित हुए। 'चार बाग' की कल्पना भी उन्हीं की देन है।

1.6 चित्रकला

मुगल साम्राज्य का इतिहास केवल राजनैतिक दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं बल्कि सांस्कृतिक प्रगति के लिए भी उल्लेखनीय है। कला के अनेक क्षेत्रों में मुगल शासकों को अभिरूचि थी और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण कला के क्षेत्र में भी बहुमुखी प्रगति के रूप में देखा जा सकता है। चित्रकला के क्षेत्र में भी मुगल शासकों का योगदान प्रशंसनीय रहा है और वस्तुतः मध्यकालीन भारतीय चित्रकला मुगल सम्राटों के प्रोत्साहन का ही परिणाम है।

मुगल चित्रकला का भारत में विकास हुमायूँ के शासनकाल से प्रारम्भ हुआ। शेरशाह के हाथों पराजित होने के बाद जब हुमायूँ ईरान में निवास कर रहा था तो उसने 'तारीखे खानदाने तैमुरिया' की पांडुलिपि को चित्रित करने के लिए ईरानी चित्रकारों की सेवा प्राप्त की। ये थे मीर सैय्यद अली और खजा अब्दुस्समद। ये दोनों अपना काम काफी लम्बे समय तक करते रहे। इसी बीच हुमायूँ भारत लौट आया और 1555 ई॰ में मुगल साम्राज्य की पुनर्स्थापना हुई।

अकबर के शासनकाल में मुगल चित्रकला ने नया रूप धारण किया जिस पर भारतीय प्रभाव की झलक मिलती है। अकबर ने भारत में समन्वित संस्कृति के विकास की नीति अपनाई। उदार धार्मिक नीति, राजपूतों से मित्रता और विभिन्न क्षेत्रीय राज्यों के भौगोलिक एकीकरण से मुगल दरबार में अलग–अलग प्रकार की सांस्कृतिक परम्पराएँ एक दूसरे के सम्पर्क में आयीं। विशेषकर राजपूत चित्रकला ने मुगल शैली को प्रभावित किया। इसकी विशेषताओं में चौड़े ब्रश की जगह गोल ब्रश का प्रयोग, गहरे नीले और गहरे लाल रंग का अधिक प्रयोग उल्लेखनीय है। अब ये दोनों विशेषताएँ मुगल चित्रों में देखी जा सकती हैं। आँख का आकार, नाक और होंठो का आकार इत्यादि भारतीयों के चेहरे के समान हैं। राजपूत शैली का इतना अधिक प्रभाव इसलिए भी सम्भव हुआ कि अकबर ने बड़ी संख्या में भारतीय चित्रकारों को नियुक्त किया। अकबर ने लेखन एवं अनुवाद को विशेष प्रोत्साहन दिया और पांडुलिपियों का चित्रित करने के लिए एक विशेष चित्रशाला का गठन किया। चूँकि इतनी बड़ी संख्या में ईरानी चित्रकारों की नियुक्ति सम्भव नहीं थीं, इसलिए अकबर ने भारतीय चित्रकारों को नियुक्त किया और इनके माध्यम से राजपूत प्रभाव मुगल शैली में प्रविष्ठ हुआ। अकबरी दरबार के उल्लेखनीय भारतीय चित्रकारों में बसावन और जसवंत के नाम अग्रगण्य हैं।

जहाँगीर का शासनकाल मुगल चित्रकला के चरमोत्कर्ष का युग था। इस काल में दो नयी विशेषताएँ विकसित हुई। पहली **मोरक्का** के रूप में देखी जा सकती हैं। यह चित्रों का संकलन विषयवस्तु से सम्बन्धित है। उदाहरण के लिए पशुओं के चित्रों का एक जगह संकलन, पक्षियों का एक जगह संकलन, फूलों का एक जगह संकलन इत्यादि। ऐसे चित्रों को बनाने में मंसूर नामक चित्रकार अत्यन्त दक्ष था और जहाँगीरी दरबार के सबसे प्रसिद्ध चित्रकार के रूप में उसका नाम लिया जाता है। दूसरी विशेषता डेकोरेटिड मार्जिन के रूप में देखी जा सकती है।

शाहजहाँ का शासनकाल चित्रकला के दृष्टिकोण से एक शिथिल काल है। शाहजहाँ की विशेष अभिरूचि स्थापत्य कला में थी और चित्रकला का चरमोत्कर्ष जहाँगीर के काल में प्राप्त हो चुका था, अतः इस काल में चित्रकला की विशेष प्रगति सम्भव नहीं हुई।

औरंगजेब का शासनकाल वास्तविक पतन का काल है। दरबार में कट्टरपंथी प्रभाव में वृद्धि के कारण कला को प्रोत्साहन मिलना बन्द हो गया, संगीतकार और चित्रकार भी नये प्रश्रयदाताओं की खोज में मुगल दरबार से प्रस्थान करने लगे। इस प्रगमन के कारण मुगल दरबार में चित्रकला का पतन तीव्र गति से हुआ परन्तु दूसरी ओर राजपूत राजघरानों में इन चित्रकारों को संरक्षण मिलता रहा और परिणामस्वरूप राजपूत एवं कांगड़ा शैली का विकास सम्भव हुआ।

1.7 संगीत

तुर्क–अफगान शासकों ने संगीत के विकास में विशेष अभिरूचि नहीं ली। फिरोजशाह के समय में 'गुन्यातुल मुगनिया' नामक रचना लिखी गयी जो भारतीय संगीत से सम्बद्ध सात संस्कृत रचनाओं का संकलित अनुवाद थी। इसके अतिरिक्त सिकन्दर लोदी ने भी संगीत के विषय पर एक अनुवादित रचना तैयार कराई जो 'लहजाते सिकन्दरी' कहलाती है। यह आश्चर्यजनक बात है कि इन दोनों ही शासकों की धार्मिक नीतियाँ संकीर्णता की भावना से प्ररित थीं लेकिन संगीत, जो कट्टरपन्थियों द्वारा इस्लामी शिक्षाओं के अनुरूप नहीं माना जाता था, इन दोनों ही को आकर्षित करता रहा। दूसरी ओर सूफी सन्तों और विशेषकर चिश्ती सम्प्रदाय के सन्तों ने संगीत के विकास में योगदान दिया। उनके द्वारा आयोजित 'समा' के माध्यम से ईरानी राग–रागिनियाँ भारत में प्रचलित हुईं। अमीर खुसरो ने भी ईरानी और भारतीय संगीत की परम्पराओं को एक–दूसरे से समन्वित करने के प्रयास किए और इस क्रम में नये राग और रागिनियों के साथ–साथ यंत्रों को प्रस्तुत किया। भक्ति आन्दोलन के सन्तों ने भी संगीत के विकास में योगदान दिया था। वैष्णव सन्तों ने 'विष्णुपद' का विकास किया, चैतन्य ने विशेषकर संकीर्तन को लोकप्रिय बनाया। मीरा ने भजनों की रचना और गायन के क्षेत्र में योगदान दिया। कबीरदास, गुरुनानक और उनके शिष्य मर्दाना ने भी संगीत के विकास में अपना योगदान प्रस्तुत किया।

इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय राज्यों के शासकों ने भी संगीत के विकास में अभिरूचि ली। ग्वालियर के शासक राजा मानसिंह ने 'मान कौतूहल' नामक रचना तैयार कराई। जौनपुर के शासक इब्राहिम शाह शर्की और मालवा के शासक बाजबहादुर का भी संगीत के प्रति विशेष लगाव रहा। इस प्रकार मुगलों को अतीत काल से ही संगीत के विकास की परम्परा से प्रेरणा मिली थी। उनका अपना उदार दृष्टिकोण इस कार्य में और भी सहायक सिद्ध हुआ। अकबर ने संगीत को दरबार की कार्रवाई का अभिन्न अंग बनाया। अबुज फजल के अनुसार अकबर के दरबार में 66 संगीतज्ञ थे जो हिन्दू, मुस्लिम, ईरानी और तूरानी सम्प्रदायों से सम्बद्ध थे। इनमें पुरूष और महिलाएँ दोनों ही शामिल थे। इनमें सबसे प्रसिद्ध नाम मियाँ तानसेन का है जो ग्वालियर के शासक राजा मानसिंह के दरबार से होते हुए मुगल दरबार तक पहुँचा था। वह एक अत्यन्त दक्ष कलाकार था और उसके सम्बन्ध में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। युसुफ हुसैन का विचार है कि अमीर खुसरो ने भारतीय और ईरानी संगीत के बीच सम्मिश्रण लाने का जो प्रयास आरम्भ किया था वह तानसेन द्वारा परिपूर्ण हुआ। यही कारण है कि

मुगल दरबार के संगीत की अपनी एक विशिष्ट पहचान विकसित हुई जिसमें भारतीय और ईरानी संगीत का सम्मिश्रण था।

1.8 निष्कर्ष

मुगल शासकों के बीच विद्यानुराग की प्रवृत्ति बहुत प्रबल थी। बाबर एक उत्कृष्ट लेखक और कवि था, हुमायूँ विद्वान था, अकबर अशिक्षित होने पर भी विद्या और विद्वानों का सम्मान करता था। जहाँगीर अत्यन्त सुशिक्षित और विद्वान व्यक्ति था। शाहजहाँ और औरंगजेब भी विद्यानुरागी थे। ऐसे शासकों के अधीन साहित्यिक प्रगति का उच्च स्तर प्राप्त होना स्वाभावित था। अकबर ने अपने दरबार में अनेक साहित्यकारों को प्रश्रय दिया। उसके दरबार का प्रसिद्ध साहित्यकार अबुल फजल था। वह इतिहासकार होने के साथ–साथ एक महान लेखक था। उसने फारसी गद्य लेखन की एक अत्यन्त सुन्दर और उत्कृष्ठ शैली का विकास किया जिसका अनुकरण उसके बाद से सभी लेखकों ने किया परन्तु कोई भी उस स्तर पर पहुँच नहीं सका। दूसरा प्रसिद्ध नाम फैजी का हैं जो एक विख्यात कवि था और अबुल फजल का भाई भी। फारसी भाषा के अन्य प्रसिद्ध कवियों में उत्वी और नजीरी थे।

क्षेत्रीय भाषाओं में हिन्दी का विकास पूर्ववत् होता रहा। तुलसीदास की जगत प्रसिद्ध रचना, रामचरित् मानस की रचना अकबर के समय में हुई। अकबर का प्रसिद्ध दरबारी मिर्जा अब्दुर्रहीम खानखाना भी हिन्दी का श्रेष्ठ कवि था और 'रहीम' के उपनाम से उसके लिखे गये दोहे आज भी प्रसिद्ध हैं। शाहजहाँ के दरबार में भी चिन्तामणि और जगन्नाथ जैसे कवियों को प्रश्रय मिलता रहा। अन्य भाषाओं के विकास में उर्दू को दक्षिण भारत के राजवंशों का प्रश्रय मिलता रहा और उत्तर मुगलकाल में इसका प्रचलन दरबार में भी हुआ। अन्तिम मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फर उर्दू भाषा में कविताओं की रचना करता था। उसके समकालीनों में उर्दू के विख्यात कवि मिर्जा गालिब, जौक और मोमिन थे। पंजाबी, मराठी और बंगला भाषाओं के विकास में समकालीन भक्त सन्तों का योगदान उत्तरदायी रहा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- चोपड़ा, पी0एन. आपसिट, पेज–6
- अशरफ, आपसिट, पेज–205
- बनारसी प्रसाद सक्सेना, शाहजहां ऑफ देहलीख पृ0 27
- श्रीवास्तव, एल0एल0, आपसिट, पृ0 27
- अशरफ, आपसिट, पेज–82
- यदुनाथ सरकार, आपसिट, पेज–135
- आइने अकबरी, भाग–3, कलकत्ता, 1872–73, पृ0 312
- इरफान हबीब, दी एग्रेरियन सिस्टम ऑफ दी मुगल्स, बम्बई, 1963, पेज–94
- उद्वत हरिशचन्द्र वर्मा, संपादक, मध्य कालीन खण्ड–2 (1540–1761), प्रथम संस्करण, 1963 हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विष्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पेज–443
- कैम्ब्रिज इकनामिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, खण्ड–1, पृ0461

- इरफान हबीब, दी एग्रेरियन, आपसिट, पेज–343
- मोरलैण्ड, दि एग्ररियन, आपसिकट, पेज–96
- चोपड़ा, पी0एन., आपसिट, पेज–18
- फ्रेंकोस, पेल्सर्ट, जहांगीर्स इण्डिया, अनुवाद डब्लू0एच0 मोरलैण्ड तथा पी0गल0, दिल्ली, 1925
- कैम्ब्रिज इकनामिक हिस्ट्री ऑ इण्डिया, पु0 462
- रिजवी, मुगलकालीन भारत, भाग–1, पृ0 191–94
- सतीशचन्द्र, मेडिवल इण्डिया, पृ 29–46
- इरफान हबीब, द एग्रेरियन, आपसिट, पृ0 101
- श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत.